International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 23-01-2023, Accepted: 07-02-2023, Published: 25-02-2023
Volume 9, Issue 1, 2023, Page No. 46-48

सामाजिक प्रेरणा के परिप्रेक्ष्य में विश्णु प्रभाकर की लेखन यात्रा

डॉ. अनीता यादव
सह–आचार्य, (हिन्दी), राजकीय महाविद्यालय, बून्दी, राजस्थान, भारत

सारांश
प्रत्येक रचना के पीछे कोई न कोई प्रेरणा अव य होती है। विश्णु प्रभाकर जी का मुख्य प्रेरणा स्त्रोत समाज है। जो नानाविध समस्याओं को अपने भीतर छिपाये हुए है। विश्णु प्रभाकर ने समाज की इस असन्तुलित परिस्थिति को देखा तो उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से समाज का मार्गद न करना आवय क समझा। उनका नाट्य साहित्य इन प्रेरणाओं की ही परिणति है। समाज की समस्याओं ने तथा विसंगतियों ने उन्हें अपनी ओर आकर्शित किया और उन्हें प्रेरणा दी कि वे उनके उन्मूलन के लिए प्रयत्न करें। वर्तमान ही नहीं अतीत का समाज भी विश्णु प्रभाकर के लिए प्रेरणा स्त्रोत रहा है। लेखन के क्षेत्र में आने का कारण उनका अपना परिवे ा भी रहा। उनका मानना है प्रेरणा और सर्जना का आपस में अटूट और गहरा सम्बन्ध है। प्रेरणा परिवे ा का भी पर्याय है।

मूल शब्दः लेखक, समाज, प्रेरणा, क्रौंचवध, अर्न्तव्यथा, संस्कृति

प्रत्येक रचना के पीछे कोई न कोई प्रेरणा अवश्य होती है। लेखन चाहे किसी उद्देश्य से हो लिख पाने के लिए प्रेरणा का होना तो अनिवार्य ही है। सभी अवस्थाओं और परिस्थितियों में प्रेरणा का स्रोत एक ही हो, यह आवश्यक नहीं। समय–समय पर प्रेरणायें अलग–अलग ढंग की भी हो सकती है। विष्णु प्रभाकर जी का मुख्य प्रेरणा स्रोत समाज है जो बहुमुखी जटिल समस्याओं को अपने गर्भ में छिपाये हुए है। विष्णु प्रभाकर जी को समाज में चलने वाले शोषण, अधिकारी और अधिकृत शोषक और शोषित के बीच होने वाले अमानवीय अन्याय सहन नहीं।

विष्णु प्रभाकर जी समाज के प्रति अपने कर्तव्य या देय को ही अपने साहित्य का प्रेरणा स्रोत स्वीकार करते हैं। उन्होंने समाज का अंग होने के नाते अपने जीवन में या आस–पास में जो अन्तर्विरोध देखा है उसी की ओर विद्रूपमय लक्ष्य करके लिखा हैं। उन्होंने अपनी आँखों से पराधीन भारत की दुर्दशा देखी। धर्म और संस्कृति के नाम पर मानवता को नष्ट होते देखा। स्वार्थी भ्रष्टाचारी, राजनैतिक नेताओं को देखा। साधनहीन जनता को पूँजीवाद की निर्मम चक्की में पिसते देखा। पुरुष आश्रित व्यक्तित्वहीन नारी को देखा। निराश्रय विधवाओं को देखा। अवोध जनता को पथ भ्रष्ट करने वाले धार्मिक पाखंडियों को देखा और देखा कि अनेक प्रतिगामी जर्जर रूढ़ियों को।

विष्णु प्रभाकर जी के संवेदनशील व्यक्तिव ने यह सब कुछ देखा और ऐसे समाज के प्रति अपना कुछ देय भी अनुभव किया। उनका यह देय है उक्त सामाजिक समस्याओं के विरुद्ध संघर्ष। उनका यही संघर्ष प्रेरणादायक नाट्य–साहित्य के रूप में प्रतिफलित हुआ। उन्होंने आत्म विस्मृत समाज के नंगे शरीर में अपने कलम की तीक्ष्ण नोंक बार–बार चुभा कर जगाने का प्रयास किया है। समाज से प्रेरित होकर ही उन्होंने ऐसे नाट्य साहित्य की सृष्टि की जिनमें समस्याओं के समाधान भी है। इस प्रकार स्पष्ट है कि समाज ही उनका मूल प्रेरणा स्रोत है। समाज से प्रेरित होकर ही उनके सभी विचार और आदर्श निश्चित हुए हैं। सामाजिक प्रेरणा के परिप्रेक्ष्य में विष्णु प्रभाकर की लेखन यात्रा से तात्पर्य उनके लेखन के उद्देश्य से है। मानव जाति का हित सम्पादन करे, वही साहित्य है। उनके लेखन का उद्देय भी मानव जाति का हित सम्पादन है।

लेखन के क्षेत्र में विष्णु प्रभाकर के आने का कारण उनका अपना परिवेश रहा है। जानबूझ कर नहीं, लेकिन अनायास ही ऐसे अवसर आते रहे कि उन्होंने अपने को उपेक्षित और अपमानित महसूस किया। इसी प्रतिक्रिया स्वरूप अर्न्तद्वन्द का जन्म हुआ और अपनी व्यथा को व्यक्त करने के लिए उन्होंने लेखनी का सहारा लिया विष्णु प्रभाकर को पढ़ने का बहुत शौक था। इसी में अज्ञात रूप से लेखक बनने की चाह कहीं न कहीं अवश्य पैदा हो गयी।

दुर्भाग्य वश वह अपनी इच्छानुसार शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके क्योंकि परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। दसवीं पास करके 800/– रू0 महीने की नौकरी करने के लिए बाध्य होना पड़ा। हार्दिक अभिलाषा थी मुक्ति संग्राम का सैनिक बनने की पर बनना पड़ा सरकारी नौकर इन सबका परिणाम यह हुआ कि उनके अन्तर का संघर्ष और भी तीव्र हो उठा। इससे लाभ यह हुआ कि उनमें स्वयं को व्यक्त करने की इच्छा प्रखर हो गयी इसी की परिणति उनके लेखक रूप में हुई। विष्णु प्रभाकर ने अपने स्वप्न भंग को क्रौंचवध की संज्ञा दी है। ''क्रौंचवध के दर्द को सहने की यातना में से गुजरने के बाद ही तो सर्जन सम्भव होता है तब कैसा विषाद कैसा मोह''(1)। विष्णु प्रभाकर का क्रौंच वाल्मीकि के क्रौंच की तरह एक दम नहीं मरा वह तो जीवन की विसंगतियों को बार–बार देख कर बार–बार मरणासन्न हुआ है। यही कारण है कि लेखक उसे हर बार बचाने में लगे रहे हैं। ''आदि कवि का क्रौंचवध तो एक बार ही हुआ था पर मेरा क्रौंचवध तो बार–बार तिल–तिल मृत्यु की ओर घिसटता रहा। आंख खुलने पर पाता हूं कि सरकारी पशुपालन फार्म के दफ्तर में चतुर्थ श्रेणी का कर्मचारी बन कर रह गया है। झाड़ पोंछ, दवातों में स्याही और फाइलों की देखभाल यहां मेरा कर्तव्य कर्म बन गया''(2)।

''वे इस असह तनाव जनित द्वन्द दर्द को ही अपने रचनाकार होने की मूल प्रेरणा पाते हैं। इस प्रकार मेरे लेखन का मूल अन्तर्व्यथा की अभिव्यक्ति ही है(3)।'' अपनी हीनता की भावना निरर्थकता का बोध, अनुपयोगिता की व्यथा अतृप्ति और असन्तोष की अनुभूति ने उन्हें विद्रोह के लिए विवश किया। उनका यह विद्रोह–भाव कई रूपों में प्रकट हुआ जैसे खद्दर पहनने की कसम खाने, हरिजन, अछूत जमादारिन चन्दो चाची से जान–बूझकर लिपटने तथा मुसलमान दोस्तों के साथ खाने–पीने आदि। विष्णु प्रभाकर ने लिखा भी है कि ''तनाव के उन क्षणों में मैंने बार–बार यह अनुभव किया कि अन्दर कुछ है जो बाहर आने को छटपटा रहा है। लेकिन हर व्यक्ति इतना प्रतिभाशाली नहीं होता कि क्रौंचवध होते ही उसके अन्तर में मानिषाद जैसे अनुष्टुप

छन्द फूट निकलें और रामायण जैसा महाकाव्य आधार बन जाये। मैं भी नहीं था इसलिए आसुंओं की राह होती हुई मेरी अभिव्यक्ति पहले डायरी के रूप में व्यक्त हुई(4)।'' उनके अनुसार यह असन्तोष अतृप्ति का भाव ही अपने प्रति समाज के प्रति या शासन और व्यवस्था के प्रति सृजन की मूल प्रेरणा शक्ति है। वास्तव में व्यथा और दर्द मांजते हैं। परिष्कार करते हैं, समाज से जोड़ते हैं, संवेदनशील बनाते हैं।

लेखन की ओर प्रेरित होने का कारण बताते हुए विष्णु प्रभाकर ने लिखा है। लेखन की ओर प्रवृति होने के पीछे अन्तःस्फूर्त चेतना इस मायने में थी कि मुझे बचपन से ही छपे हुए शब्दों के प्रति विशेष मोह था। छपे हुए रद्दी कागजों को भी संभाल कर रखता था। उनमें जो कुछ लिखा रहता था उसे पढ़कर मेरे भीतर एकहूक–सी उठती थी कि क्या मैं भी इस तरह का कुछ लिख सकूंगा? कदाचित् इस प्रवृति ने मुझे लेखन की दिशा में प्रवृत किया। यही नहीं, हां आर्य समाज पुस्तकालय में लाइब्रेरियन की नौकरी मिल गयी। वहां मुझे महान लेखकों की रचनायें पढ़ने को मिल गयीं। रविन्द्र, शरत, प्रेमचन्द तथा कुरान, वेद, उपनिषद् आदि मैंने वहीं पढ़े। रूसी तथा अन्य भाषाओं के अनूदित साहित्य के सम्पर्क में भी आया और इस प्रकार मेरे भीतर लेखक जाग उठा। वार्ता के मध्य आप स्पष्ट करते हैं कि ''शरत के लेखन ने शुरू से ही प्रभावित किया और उनकी विलक्षण भावुकता मेरे लेखन में आ गयी। प्रेमचन्द की सामाजिकता और जैनेन्द्र की सूक्ष्म सोच की भाषा से भी मैं प्रभावित हुआ(5)। ''विष्णु प्रभाकर को प्रारम्भिक जीवन में कुछ ऐसी घटनाओं को देखना, भुगतना पड़ा जिससे उनका मन प्रताड़ित हुआ जैसे उन के पिता दुर्गाप्रसादजी धर्म–कर्म में लिप्त रहते थे, छूतछात, जाति–पांति, उंच––नीच जैसी सामाजिक कुरीतियों के वे कट्टर समर्थक थे। इन निरंकुश संकीर्णता ने उनकी संवदेना को भी तर ही भीतर सुखा दिया था और प्रेम करने की उनकी ललक भी उभरते न उभरते समाप्त हो जाती थी। इसके विपरीत उनके बाबा उदार वृति के थे। हिन्दू–मुसलमान होना उनके लिए कोई अर्थ नहीं रखता था। अपने बाबा से हो उन्होंने अछूतों और मुसलमानों के प्रति संवेदनशील मन पाया था। इसी आधार पर उनका एक मानव एक संसार का स्वप्न पुष्पित–पल्लवित हुआ। विष्णु प्रभाकर जी के समय में हिन्दू–मुसलमान मिल–जुलकर तो रहते थे परन्तु भेद–भाव विद्यमान था। ''मेरे साथी मुसलमान बच्चे मेरे घर आते। मेरी मां उन्हें खाना खिलाती पर उनके जाने के बाद उन के जूठे बर्तन आग से साफ किये जाते। हम उनके घर जाते तो हिन्दू हलवाई हमारे लिए मिठाई लाता। घर की महिलायें उसे कभी नहीं छूतीं। कैसे प्यार से सहेज रखा था हमने इस पाप को ? हरिजनों ने तो इसे और भी सहजभाव से स्वीकार कर लिया था। हमारी छाया से दूर गाँव से बाहर गन्दी बस्ती में रहते थे। यही सब देखकर मेरा मन प्रश्नों से जूझने लगा था(6)।''

विष्णु प्रभाकर सोचते थे यदि हरिजन मुझे छू ले तो क्या हो जायेगा? मुसलमान मित्रों के हाथ का छुआ खाने से मेरे शरीर में क्या बदलाव आयेगा? प्रतिक्रिया स्वरूप विष्णु प्रभाकर हरिजनों को जान बूझकर छूते थे विशेषकर जमादारिन चन्दो चाची को। माँ उन्हें डांटती थी और सोने की अगूंठी पानी में डालकर नहलाती या वह पानी उन पर छिड़क देती। परम वैष्णव पिता को पता लगने पर खूब मार खानी पड़ती। उनके अन्दर विद्रोह और दुस्साहस की आग पिता के व्यवहार ने ही सुलगाई थी। इतना होने पर भी उनके मन की प्रयोगशाला के द्वार बन्द नहीं हुए। वह मस्जिद में जाकर पानी पीते और देर तक किसी जिन्न के आने की राह देखते रहते। हर अंग को देखते कहीं कुछ हुआ है क्या? सब कुछ सामान्य पाने पर वह चीखते–चिल्लाते। ये सारी बातें निरर्थक हैं। झूठ–झूठ, सब झूठ, कहते। इस प्रकार घटनायें उनके सृजन में महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने जो देखा भोगा उसी को वैचारिक स्तर पर अपनी संवेदना से जोड़कर जीवन्त बनाने की चेष्टा की है।

प्रेरणा और सर्जना का आपस में अटूट और गहरा सम्बन्ध है। प्रेरणा को उदीप्त करने का कार्य करती है चेतना। इसलिए प्रेरणा और चेतना का लगभग एक ही अर्थ है। प्रेरणा परिवेश की भी पर्याय है। इसी तथ्य को रेखांकित करते हुए उन्होंने लिखा है कि ''मेरे प्रारम्भिक जीवन की वेदना शरत की जीवनव्यापी वेदना से मेल खाती है। जिस प्रकार उनका वह जीवन सृजन का आधार बना उसी तरह मेरे सृजन की प्रेरणा भी मेरा प्रारम्भिक जीवन ही रहा। जहाँ आर्यसमाज ने मुझे प्रचलित मूल्यों पर प्रश्न चिन्ह् लगाना सिखाया। गांधीजी ने अन्याय का प्रतिकार करने की प्रेरणा दी वहीं शरत की करुणा प्रेम की पर्यायवाची है(7)।'' 15 वर्ष की व्यथा कथा समय, मेरे परिवेश को ही रेखांकित नहीं करती, मेरी अन्तर्व्यथा की भी साक्षी है। यह मेरे साहित्य की प्रेरणा शक्ति है उसकी समिधा भी यही बनी है।

परिवेश से प्रभावित होकर विष्णु प्रभाकर का मूल स्वर मनुष्य की पहचान तथा हर प्रकार के शोषण से मुक्ति रहा है। साहित्य की सभी विधाओं चाहे नाटक हों, कहानियाँ हों, उपन्यास हो या निबन्ध तथा अन्य रचनायें। 22 जनवरी, 1987 को दिये गये एक इण्टरव्यू में आपने कहा था कि मैं साहित्यकार को तीसरी आँख मानता हूँ। यह तीसरी आँख दिशा निर्देश नहीं प्रश्न चिह्न लगाती है। समाज और व्यवस्था को ठीक करने के लिए पाठकों को सही स्थिति से अवगत कराते हुए उनकी संवेदना को जागृत करती है। विष्णु प्रभाकर उन लेखकों में हैं जिन्होंने रेडियो की प्रेरणा से नाट्य लेखन प्रारम्भ किया था। विष्णु प्रभाकर के नाट्य संसार का अवलोकन यदि ध्यान से किया जाये तो स्पष्ट पता चलता है कि उनका रुझान रेडियो नाटक की ओर बहुत अधिक रहा है। इसके प्रति रुचि का एक कारण यह भी हो सकता है कि वह खुद रेडियो में ड्रामा– प्रोड्यूसर के रूप में कार्यरत रहे रेडियो की जरूरतों को देखते हुए उन्हें खुद भी अनेक नाटक लिखने पड़े। विष्णु प्रभाकर इस विधा की शक्ति को अच्छी तरह पहचानते थे कि लाखों, करोड़ों लोगों तक अपनी बात को पहुँचाने का यह एक सशक्त माध्यम है। अपने नाट्य लेखन के बारे में उन्होंने लिखा है। ''नाट्य लेखन से मेरा सक्रिय और सार्थक सम्बन्ध ध्वनि नाटक (रेडियोनाटक के माध्यम से हुआ। मेरे अधिकांश एकांकी पहले आकाशवाणी के लिए ही लिखे गये। रंगमंच और दूरदर्शन से मेरा वास्तविक सम्बन्ध बहुत बाद में हुआ इस तरह विष्णु प्रभाकर का जुड़ाव सबसे अधिक रेडियो नाटक से रहा(8)।'' वास्तविकता यह है कि उनके जैसा प्रयोगधर्मी नाटककार दूसरा नहीं दिखता। अपने समकालीन नाटककार जगदीश चन्द्र माथुर, सेठ गोविन्ददास, लक्ष्मी नारायण मिश्र, उदय शंकर भट्ट, उपेन्द्रनाथ अश्क आदि के बीच एकाकीकार के रूप में तो अपना सर्वोच्च स्थान उन्होंने बनाया ही है। रेडियो नाटककार के रूप में भी अद्वितीय स्थान ग्रहण किया है।

विष्णु प्रभाकर ने अपने नाट्य, साहित्य में समाज में व्याप्त समस्याओं, विषमताओं, विद्रूपताओं, उच्छृंखलता को चित्रित किया है साथ ही उचित समाधान का संकेत कर समाज में एक नयी जागृति या चेतना लाने का प्रयास किया है। अपने नाट्य साहित्य में उन्होंने सामाजिक समस्याओं को ही ज्यादा उभारा है, जैसे ''टूटते परिवेश'', ''युगे–युगे क्रान्ति'', ''अब और नहीं'', ''प्रकाश और परछाई '', ''साँप और सीढ़ी'', ''चिरन्तन खोज'', ''भोगा हुआ यथार्थ'', ''सूली पर टंगा श्वेत कमल'', ''रात, चाँद और कुहर, आदि में समस्यायें अपनी सम्पूर्णता के साथ उभरी हैं। सामाजिक सन्दर्भ में उन्होंने नारी की दुर्दशा धन कुबेरों के शोषण, भ्रष्टाचार, अवैध रूप से पैसा कमाने वालों तथा उनके राजनैतिक जोड़–तोड़ आदि पर विशेष रूप से व्यंग किये हैं। इसी प्रकार उनकी कहानियाँ व्यक्ति परिवार से लेकर समाज और राष्ट्र तक की संवेदनाओं की कहानियाँ हैं। उनकी समस्याओं और

आंकाक्षाओं की कहानियां है। धरती अब भी घूम रही है', ठेका, सलीब, आदि कहानियाँ सामाजिक व्यवस्था की भ्रष्टता को बेनकाब करती हैं। मेरा बेटा, अधूरी कहानी, मेरा वतन हिन्दू–मुस्लिम समस्या से सम्बन्धित हैं। विष्णु प्रभाकर ने अपने उपन्यास साहित्य में भी समाज में व्याप्त समस्याओं को उठाया है। ''निशिकान्त'' में समाज जीवन की विविध समस्याओं को उजागर किया है। जैसे हिन्दू–मुस्लिम एकता का प्रश्न जाति–पांति की या छुआछूत की विकट समस्या को भी प्रस्तुत उपन्यास में कई स्थलों पर उठाया गया है। तट के बन्धन मुख्य रूप से नारी जीवन की त्रासदी को बताता है। नारी विवाह में आने वाली समस्या जैसे दहेज, अन्तर्जातीय विवाह, प्रेम और विवाह नारी और नौकरी की समस्याओं को उठा विष्णु प्रभाकर ने नारी को स्वयं अपने पथ का निर्माण करने की प्रेरणा दी है। पुरुष प्रधान समाज में नारी की निम्नतर स्थिति विधवा, विवाह, सुहाग की विड़म्बना विवाह विच्छेद आदि कई वर्तमान सामाजिक समस्याओं पर विचार किया गया है और उनके विरोधाभासों को स्पष्ट किया गया है।

निष्कर्ष

विष्णु प्रभाकर जी के समस्त साहित्य यथानाटक, कहानी, उपन्यास आदि के प्रेरणा स्रोत विविध जटिलताओं और गूढताओं से भरा यह समाज ही है। वह समाज से इतर कुछ भी नहीं सोचते क्योंकि वह मानते हैं कि यह समाज ही इतनी प्रचुर सामग्री से भरा हुआ है कि इस से इतर जाने की आवश्यकता नहीं।

संन्दर्भ–सूची

1. विश्णु प्रभाकर, एक दि ाहीन सफर, वीणा (पत्रिका) इन्दौर जुलाई 1987 अंक
2. विश्णु प्रभाकर, क्या खोया क्या पाया ? (पृ. 14–15)
3. विश्णु प्रभाकर, कुछ भाब्द कुछ रेखायें, (पृ. 167)
4. विश्णु प्रभाकर, क्या खोया क्या पाया ? (पृ. 16)
5. विश्णु प्रभाकरः सरिका अंक 294 1 अक्टूबर 1981 (पृ. 11)
6. सम्पादक डॉ. महीप सिंह, विश्णु प्रभाकरः व्यक्ति और साहित्य, (पृ. 20)
7. विश्णु प्रभाकर, क्या खोया क्या पाया ? (पृ. 19)
8. डॉ. वि वनाथ मिश्र एवं डॉ. कृश्ण कुमार गुप्ता, विश्णु प्रभाकर, (पृ. 266)